Q. सांख्य के अनुसार पुरुष के स्वरूप की व्याख्या कीजिए।
Explain the nature of Purusa or Self according to the Sankhya.

Ans सांख्यदर्शन के अनुसार प्रकृति और पुरुष दो परमतत्व हैं। ~~यहाँ हमें पुरुष के विषय~~

पुरुष का स्वरूप:- भारतीय दर्शन में जिसे आत्मा कहा जाता है, उसे ही सांख्य विचारक 'पुरुष' के नाम से पुकारते हैं। आत्मा के स्वरूप को लेकर भारतीय विचारकों में काफी मतभेद पाया जाता है। चार्वाक के अनुसार आत्मा शरीर से भिन्न नहीं है। यह शरीर की भाँति ही भौतिक है। बौद्धदर्शन के अनुसार आत्मा चेतना का प्रवाह है। जैन-दर्शन के अनुसार आत्मा नित्य एवं चेतन द्रव्य है। न्याय-वैशेषिक के अनुसार आत्मा स्वयं अचेतन है। जब इसका सम्पर्क शरीर, मन एवं इन्द्रियों से होता है तब इसमें चैतन्य का उदय होता है। ~~अतः इस प्रकार यहाँ चैतन्य आत्मा का आकस्मिक~~ गुण माना गया है। शंकर ने आत्मा को 'सच्चिदानन्द'

सांख्यदर्शन के अनुसार पुरुष शुद्ध चैतन्य है। यह चैतन्य आत्मा की सभी अवस्थाओं (जाग्रतावस्था, स्वप्नावस्था और सुषुप्तावस्था) में विद्यमान रहता है। पुरुष स्वयं चैतन्य से प्रकाशित होता है और अन्य वस्तुओं को भी प्रकाशित करता है। पुरुष शरीर, मन, इन्द्रिय, बुद्धि, अहंकार इत्यादि से भिन्न है। यह निष्क्रिय एवं अकर्त्ता है। पुरुष सदैव ज्ञाता है यह कभी ज्ञेय नहीं बन सकता। यह गुणरहित है। यह नित्य, अनादि एवं अनन्त है। यह पुरुष देश और काल से परे है। इसमें सुख, दुःख एवं उदासीनता के भाव नहीं पाए जाते क्योंकि यह गुणरहित है।

सांख्य और न्याय-वैशेषिक मत में अन्तर—

(क) न्याय-वैशेषिक के अनुसार चैतन्य आत्मा का आगन्तुक लक्षण है, न कि स्वाभाविक लक्षण। इसके विपरीत, सांख्य चैतन्य को आत्मा का स्वाभाविक लक्षण मानता है।

(ख) न्याय-वैशेषिक आत्मा को सुख, दुःख, राग, द्वेष इत्यादि का आधार बतलाता है किन्तु सांख्यदर्शन के अनुसार इनका आधार प्रकृति है, न कि आत्मा या पुरुष।

सांख्यमत और वेदान्तमत में अन्तर—

(क) शंकर के अद्वैतवेदान्त के अनुसार आत्मा 'सच्चिदानन्द' है। इसमें सत्, चित् और आनन्द तीनों पाए जाते हैं। इसके विपरीत, सांख्यदर्शन आत्मा में केवल चैतन्य मानता है न कि सत् और आनन्द। चैतन्य और आनन्द, इसके अनुसार परस्पर विरोधी हैं। आनन्द सत्त्वगुण का परिणाम है और पुरुष के कोई भी गुण नहीं है। इसलिए पुरुष में आनन्द का अभाव बतलाया गया है।

(ख) शंकर के अनुसार आत्मा एक है किन्तु सांख्य के अनुसार आत्मा या पुरुष अनेक है।

(ग) शंकर अनेकता को असत्य एवं एकता को सत्य मानते हैं। इसके विपरीत सांख्य अनेकता को सत्य मानता है।

~~सांख्य~~ सांख्य, बौद्ध एवं चार्वाक मतों में अन्तर—

चार्वाक के अनुसार आत्मा शरीर से अभिन्न होने के कारण भौतिक है। किन्तु सांख्य के अनुसार आत्मा या पुरुष शरीर से भिन्न होने के कारण अभौतिक है। बौद्ध दार्शनिक आत्मा को 'चेतना का प्रवाह' ~~बतलाते~~ बतलाते हैं। किन्तु सांख्य आत्मा को अपरिवर्तनशील एवं नित्य मानता है।